

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 4, नये नियम में सृष्टि, भूमि, मनोरंजन, भाग 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 4 है, न्यू टेस्टामेंट में सृष्टि, भूमि, पुनर्निर्माण, भाग 1।

हम सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि के बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय पर विचार कर रहे हैं।

और मैं पुराने नियम के प्रमाणों को देख रहा था। अब मैं जो करना चाहता हूँ, वह है नए नियम में सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि पर जोर देना। और हम पहले ही बता चुके हैं कि जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो विशेष रूप से एक पूर्णता की भविष्यवाणी की प्रत्याशाएँ जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को भूमि पर, सृष्टि में वापस लाता है, जो उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के लिए परमेश्वर के इरादे की पूर्ति है, लेकिन साथ ही परमेश्वर द्वारा अब्राहम को भूमि देने का वादा भी है, जो स्वयं पहली सृष्टि के बारे में परमेश्वर के वादों की पूर्ति या पुनर्स्थापना थी।

जब हम नए नियम में भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं के संदर्भ में देखते हैं, जैसा कि मैंने पहले ही किया है, अभी तक कोई तनाव नहीं है। यानी, हम देखेंगे कि नई सृष्टि के वादे, सृष्टि के लिए ईश्वर का इरादा इज़राइल को उसकी भूमि देना, मेरे विचार से, मसीह में पहले से ही पूरा हो गया है, हालाँकि यह अभी भी अभी तक या अंतिम परिणति का इंतजार कर रहा है, जो कि मैं तर्क दूंगा कि नई सृष्टि में, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से होता है। अब, मैं जो करना चाहता हूँ, जैसे-जैसे हम नए नियम में आगे बढ़ेंगे, हम सुसमाचार से शुरू करते हुए नए नियम के विभिन्न खंडों को देखेंगे।

हम पॉलिन साहित्य, नए नियम के कुछ शेष भाग को देखेंगे, और फिर रहस्योद्घाटन की पुस्तक के साथ समापन करेंगे और यह एक नई सृष्टि, भूमि में सृष्टि और वादों के पूरे होने के बारे में क्या कहता है। सुसमाचार से शुरू करते हुए, हालाँकि उतना प्रत्यक्ष नहीं, मुझे लगता है कि यीशु के दाऊद के पुत्र होने का विचार अभी भी भूमि के मुद्दे से संबंधित है। अब, मैथ्यू अध्याय 1 और श्लोक 1 में, लेखक, अपने सुसमाचार की शुरुआत में ही, संकेत देता है कि वह बाकी सुसमाचारों में यीशु को कैसे चित्रित करने जा रहा है, जहाँ वह उसे दाऊद के पुत्र और अब्राहम के पुत्र के रूप में चित्रित करता है।

और हम पहले ही देख चुके हैं कि अब्राहम को ही भूमि के वादे दिए गए थे। लेकिन पुराने नियम के अनुसार, यीशु को दाऊद का पुत्र कहकर, हमने कई ग्रंथों को देखा है जहाँ दाऊद का पुत्र सिंहासन पर बैठेगा, और जब वह सिंहासन पर बैठेगा, तो यह लोगों की भूमि पर बहाली के समय होगा। इसलिए, उदाहरण के लिए, एक पाठ में जिसे हमने यहेजकेल 36 और 37 में बहुत संक्षेप

में देखा, जो कि भविष्यवक्ता की ईश्वर से एक दिन अपने लोगों को उस भूमि पर वापस लाने की अपेक्षा का विवरण था जिसका वादा ईश्वर ने अब्राहम और कुलपिताओं से किया था।

लेकिन हमने उसमें भी अदन की भाषा देखी, जहाँ परमेश्वर अब्राहम से किए गए वादों की पूर्ति में लोगों को निर्वासन से वापस भूमि पर लौटाएगा, लेकिन मूल सृष्टि के वादों की पूर्ति में। लेकिन इसका एक हिस्सा अध्याय 37 और श्लोक 24 में पाया जाता है, जहाँ हम यह पढ़ते हैं: मेरा सेवक दाऊद उनका राजा होगा, और उन सबका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों का पालन करेंगे और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहेंगे।

वे उस देश में रहेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दिया था, वह देश जहाँ तुम्हारे पूर्वज रहते हैं। वे और उनके बच्चे और उनके नाती-नातिन वहाँ हमेशा रहेंगे, और मेरा सेवक दाऊद हमेशा उनका राजकुमार रहेगा। यह श्लोक 25 था।

तो, ध्यान दें कि कैसे भूमि पर रहना और भूमि पर पुनःस्थापित होना, दाऊद के लोगों पर शासन करने के संदर्भ में है और उससे जुड़ा हुआ है। इसलिए, और मैं जा सकता हूँ, हम भजन अध्याय दो और भजन 89 पर वापस जा सकते हैं, जहाँ दाऊद के राजा को पृथ्वी के सभी छोरों को अपनी विरासत के रूप में प्राप्त करना था। इसलिए, मेरे विचार से, जैसा कि मैंने नया नियम पढ़ा है, यदि मसीह दाऊद के राजा के रूप में शासन कर रहा है, जैसा कि नए नियम के कई ग्रंथों में कहा गया है कि वह है, तो यह सुझाव देता है कि भूमि पर पुनःस्थापना पहले से ही, किसी अर्थ में, हो रही है।

अर्थात्, नई सृष्टि का उद्घाटन पहले से ही हो रहा है। भूमि के वादे, परमेश्वर ने अपने लोगों से जो वादे किए थे, उनका उद्घाटन पहले से ही हो रहा है क्योंकि फिर से, जब दाऊद राजा के रूप में बैठता है, जब दाऊद अपने सिंहासन पर बैठता है, तो यह उस समय होगा जब परमेश्वर के लोग अपनी भूमि पर बहाल हो जाएँगे। ऐसे कई ग्रंथ हैं जो स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि नए नियम में यीशु मसीह अब एक मसीहाई राजा के रूप में, दाऊद की वंशावली में राजा के रूप में शासन कर रहे हैं।

हमने मत्ती के पहले अध्याय और पहले पद को देखा है। हमें बस इतना करना है कि सुसमाचारों में परमेश्वर के राज्य के विषय को या यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में पूरे सुसमाचार में खोजना है। मत्ती, यीशु के लिए मत्ती का पसंदीदा पदनाम दाऊद का पुत्र है।

लेकिन अन्य लोग भी सुसमाचार से बाहर जाकर इसकी पुष्टि करते हैं; उदाहरण के लिए, इब्रानियों की पुस्तक और अध्याय एक में, लेखक स्पष्ट रूप से यीशु को भजन संहिता से लेकर 2 शमूएल 7, 14 तक दाऊद के वादों की पूर्ति के रूप में देखता है। इसलिए, इब्रानियों अध्याय एक पद दो से शुरू होता है, लेकिन इन अंतिम दिनों में, उसने अपने बेटे के द्वारा हमसे बात की है जिसे उसने सभी चीजों का वारिस नियुक्त किया है और जिसके द्वारा उसने ब्रह्मांड बनाया है। बेटा परमेश्वर की महिमा की चमक है, उसके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है जो अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीजों को बनाए रखता है।

पापों के लिए शुद्धिकरण प्रदान करने के बाद, वह स्वर्ग में महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया। दाहिने हाथ पर बैठने की वह भाषा भजन 110 से आती है, जो एक और मसीहाई भजन या दाऊद के शासक या दाऊद के राजा को संदर्भित करने वाला भजन है। और फिर बाद में इब्रानियों के उसी अध्याय के पहले अध्याय और आयत पाँच से चार में, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों में से किससे कभी कहा, तू आज मेरा पुत्र है, मैं तेरा पिता बन गया हूँ।

या फिर, मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा बेटा होगा। आप देखेंगे कि ये फिर से, दूसरे शमूएल 7:14, साथ ही भजन अध्याय दो से उद्धरण हैं, दोनों स्पष्ट रूप से मसीहाई ग्रंथ हैं। इसलिए, इब्रानियों के लेखक स्पष्ट रूप से यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में देखते हैं, जो दाऊद के वादों को उनकी पूर्ति और उनके समापन तक लाता है।

हम कुछ ऐसा ही होता हुआ देखते हैं, उदाहरण के लिए, इफिसियों के अध्याय एक में पॉलिन साहित्य से एक उदाहरण, इफिसियों के अध्याय एक और श्लोक 20, और यीशु, उनके पुनरुत्थान और महिमा के संदर्भ में आगे। मैं श्लोक 19 के अंतिम वाक्यांश को पढ़ूँगा, वह शक्ति जो परमेश्वर ने प्रयोग की, वह शक्ति उसकी महान शक्ति के कार्य की तरह है, जिसे उसने, जिसे परमेश्वर ने मसीह में प्रयोग किया जब परमेश्वर ने उसे, यीशु को, मृतकों में से उठाया और उसे स्वर्गीय क्षेत्रों में अपने दाहिने हाथ पर बैठाया - भजन, भजन अध्याय 110, दाऊद के भजन का एक और संदर्भ।

इसलिए, मैं आगे बढ़ूँगा और सभी नियमों और अधिकार, शक्ति और प्रभुत्व, और हर उस उपाधि के बारे में पढ़ूँगा जो न केवल वर्तमान युग में बल्कि आने वाले युग में भी दी जा सकती है। और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पैरों के नीचे रख दिया। भजन संहिता अध्याय आठ का संदर्भ, जो आदम के लिए पूरी सृष्टि पर शासन करने के परमेश्वर के आदर्श इरादे का उत्सव है।

अब यीशु उस भूमिका को पूरा करता है, जब वह सब कुछ अपने पैरों के नीचे रख देता है, ताकि वह कलीसिया के लिए सब कुछ का मुखिया हो, जो उसका शरीर है, उसकी परिपूर्णता जो हर तरह से सब कुछ भरता है। इसलिए, इफिसियों के पहले अध्याय में, लेखक, पाठ को उद्धृत किए बिना, स्पष्ट रूप से भजन 110, एक मसीहाई भजन, लेकिन भजन आठ का भी संकेत देता है, जो उत्पत्ति में मूल सृष्टि का जश्न मनाने वाला भजन है, जहाँ आदम को शासन करना था और परमेश्वर के स्वरूप के रूप में पूरी सृष्टि पर शासन करना था। अब, यीशु मसीह को स्वर्ग में उठा लिया गया है, स्वर्ग में उठाया गया है और उसे ऊंचा किया गया है और वह अपने स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है, अब वह अपने राजसी शासन में प्रवेश कर चुका है और मुझे लगता है कि भजन 110, भजन दो, वगैरह की पूर्ति में शुरू होता है।

भजन आठ अब भजनों के उस इरादे को पूरा करना शुरू करता है कि मसीहा पूरी सृष्टि पर अपना शासन बढ़ाएगा। इसलिए, इसे संक्षेप में कहें तो, यदि मसीह को मसीहाई शासक के रूप में स्थापित किया गया है, तो इब्रानियों 1, इफिसियों 1 और कई अन्य ग्रंथों में, यदि मसीह को मसीहाई शासक के रूप में स्थापित किया गया है, तो वह पहले से ही अपने शासन का विस्तार कर रहा है और भजनों की पूर्ति और अन्य पुराने नियम के ग्रंथों की पूर्ति में पूरी पृथ्वी को घेरने के लिए केवल फिलिस्तीन की भूमि से आगे की सीमाओं का विस्तार कर रहा है। इसलिए, मैं इसे इस

तरह से लेता हूँ कि इस्राएल की भूमि का उद्देश्य अंततः पूरी सृष्टि का विस्तार करना, उसे गले लगाना और उसे घेरना था।

और अब यह दाऊद के बड़े बेटे, जो यीशु मसीह हैं, में पूरा हो गया है। इसलिए, मुझे लगता है कि दाऊद के बेटे, यीशु का विषय, कम से कम निहित रूप से, भूमि के वादों की पूर्ति का भी सुझाव देता है। फिर से, भजन पाठ के प्रकाश में, कुछ भविष्यवाणियों के पाठ जहाँ दाऊद का बेटा तब शासन करेगा जब इस्राएल को उसकी भूमि पर बहाल किया जाएगा, जहाँ वह पूरी सृष्टि पर अपना शासन बढ़ाएगा, जहाँ वह पूरी सृष्टि का उत्तराधिकारी होगा, न कि केवल फिलिस्तीन की भूमि, मुझे सुझाव देता है कि यदि यीशु दाऊद का पुत्र है और उसने अपने राजसी शासन में प्रवेश किया है, जैसा कि इब्रानियों और सुसमाचार से पता चलता है, जैसा कि इब्रानियों और पॉलिन पत्रों से पता चलता है, तो परमेश्वर का शासन, दाऊद का शासन अब पृथ्वी के छोर तक फैल रहा है, न कि केवल फिलिस्तीन की भूमि तक।

ईश्वर का शासन, पुराने नियम में फिलिस्तीन पर दाऊद का शासन, अंततः ईश्वर के उस शासन को संपूर्ण सृष्टि पर विस्तारित करने के इरादे को दर्शाता था। एक और संकेत यह है कि नई सृष्टि पहले ही आ चुकी है, ग्रेग बील ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में प्रदर्शित किया है, मुझे लगता है, कि सुसमाचारों में यीशु के अनन्त जीवन का वादा, संभवतः, विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार में, जहाँ अनन्त जीवन वाक्यांश कई बार आता है, यीशु के अनन्त जीवन का वादा, विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार में, नई सृष्टि का उद्घाटन है, नई सृष्टि का उद्घाटन जीवन है। उदाहरण के लिए, यशायाह अध्याय 65 पर वापस जाएँ, एक पाठ जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं।

नई सृष्टि के संदर्भ में, और उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में और भी पीछे जाकर, जीवन के वृक्ष के संदर्भ में, जो अपने लोगों को जीवन देने के परमेश्वर के इरादे का प्रतीक है, यशायाह अध्याय 65 में, नई सृष्टि के संदर्भ में, हम पाते हैं कि जो इसकी विशेषता है वह है समय से पहले मृत्यु या जीवन का अभाव। हमने पद 20 में उस एक वाक्यांश में सेप्टुआजेंट का भी उल्लेख किया है; मेरा मानना है कि यह सही है, जहाँ यह कहता है कि वृक्ष की तरह, वे भी वृक्ष की तरह होंगे; सेप्टुआजेंट, पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, जीवन के वृक्ष की तरह जोड़ता है। तो, मुद्दा यह है कि जीवन नई सृष्टि की विशेषता है।

नई सृष्टि का जीवन नए आकाश और नई पृथ्वी, यशायाह 65 की नई सृष्टि से संबंधित होने का प्रतीक है। अब, यीशु द्वारा अपने लोगों को दिए जाने वाले अनन्त जीवन के माध्यम से, विशेष रूप से यूहन्ना के सुसमाचार में, यह पुनरुत्थान, यह जीवन, मृत्यु पर विजय पाना, नई सृष्टि की उपस्थिति का संकेत है। इसलिए, यीशु द्वारा अनन्त जीवन का वादा मुख्य रूप से उस जीवन का वादा है जो नई सृष्टि, यशायाह 65, यहजकेल 37, और कई अन्य ग्रंथों से संबंधित है।

वास्तव में, यीशु का अपना पुनरुत्थान, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, विशेष रूप से पॉल के पत्रों में, नई सृष्टि के जीवन का उद्घाटन है और स्वयं नई सृष्टि का उद्घाटन है। इसलिए, यीशु का शरीर पुरानी सृष्टि से नई सृष्टि में जाने वाला पहला भौतिक शरीर था, एक ऐसा शरीर जो नई सृष्टि में जीवन में अस्तित्व के लिए उपयुक्त था। इसलिए, यीशु का अपना भौतिक शरीर, एक अर्थ में, नई सृष्टि का भौतिक, शाब्दिक उद्घाटन था, जिसमें यीशु का अपना पुनरुत्थान उस बात की

शुरुआत थी जिसका वादा किया गया था, पुराने नियम में नई सृष्टि के तहत वादा किया गया जीवन।

एक अन्य दिलचस्प पाठ, सिर्फ उल्लेख करने के लिए, ऐसे कई अन्य अंश हैं जिनका हम उल्लेख कर सकते हैं, लेकिन सुसमाचारों के संदर्भ में और यीशु की अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के संदर्भ में, आपके पास मैथ्यू के बिल्कुल अंत में, मैथ्यू अध्याय 27, श्लोक 51 और 52 में एक बहुत ही दिलचस्प अंश है। यह अध्याय 27 में यीशु की मृत्यु के संदर्भ में है, जिसके बाद मैथ्यू 28 में उनके पुनरुत्थान का विवरण है। लेकिन 51 और 52 से शुरू होकर श्लोक 53 में, यीशु की मृत्यु के समय घटनाओं की एक बहुत ही दिलचस्प श्रृंखला घटती है, श्लोक 51 से शुरू होकर, उस क्षण, मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया, धरती हिल गई, और चट्टानें फट गईं, कब्रें खुल गईं,

वे कब्रों से बाहर आए, और यीशु के पुनरुत्थान के बाद, वे पवित्र शहर में गए और कई लोगों को दिखाई दिए। अब, मुझे इस बात की पूरी जानकारी में जाने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि वास्तव में क्या हो रहा है और हम इसे अनुभवजन्य या शारीरिक रूप से कैसे समझते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि एक स्तर पर, इसका मुद्दा यह है कि हम यहाँ पाते हैं, यीशु की मृत्यु और उनके पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप, हम पुराने ब्रह्मांड के टूटने, धरती के हिलने और चट्टानों के टूटने और फिर लोगों के वास्तव में उठकर नई सृष्टि के उद्घाटन का संदर्भ पाते हैं। तो, मैथ्यू 27 के अंत में यह अजीबोगरीब विवरण, आप इसे जो भी समझें, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के संदर्भ में, मुझे लगता है कि एक स्तर पर मैथ्यू का यह प्रदर्शित करने का तरीका है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान नई सृष्टि का उद्घाटन करते हैं।

इसमें पुराने ब्रह्मांड का विघटन और नई सृष्टि का उद्घाटन शामिल है, जैसा कि पुनरुत्थान द्वारा प्रदर्शित किया गया है। वास्तव में, मृतकों में से पुनरुत्थान और जीवन नई सृष्टि की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। इसलिए, जब यीशु मृतकों में से जी उठता है, तो यह न केवल यीशु द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त करना है, हाँ, यह है, बल्कि यह यीशु द्वारा अपने स्वयं के पुनरुत्थान के माध्यम से नई सृष्टि के जीवन का उद्घाटन भी है।

इसलिए, जब हम सुसमाचारों को देखते हैं, तो हम पुराने नियम में देखते हैं, सबसे पहले, इस्राएल को भूमि पर वापस लाने के लिए किए गए वादों के साथ एक दाऊद का राजा भी होगा जो उन पर शासन करेगा, और दाऊद का राजा शासन का विस्तार करेगा और सीमाओं को बढ़ाकर पूरी सृष्टि तक पहुँचेगा, जो वास्तव में ईडन गार्डन में होना चाहिए था। आदम का कार्य पूरी सृष्टि पर परमेश्वर के शासन का विस्तार करना था। इसलिए, नए नियम में, हम पाते हैं कि भूमि के वादे यीशु मसीह के साथ पूरे होते दिखते हैं, जो दाऊद के पुत्र के रूप में, अब अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान और स्वर्ग में उत्थान के माध्यम से, अब पूरे ब्रह्मांड पर सिंहासनारूढ़ हैं, ताकि परमेश्वर का शासन अब पूरे ब्रह्मांड पर फैलना शुरू हो जाए।

लेकिन, जैसा कि हमने कहा, एक ऐसा आयाम है जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है; हालाँकि यीशु पहले से ही दाऊद के राजा के रूप में शासन कर रहा है और पूरी सृष्टि पर अपना शासन बढ़ा रहा है, फिर भी एक दिन है जब यह अंततः प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई सृष्टि में पूरा होगा।

अब, हम सुसमाचारों के बारे में और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हमने पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया है कि सुसमाचारों के प्रमुख तत्व यीशु को अपने दाऊद के राजत्व और अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के माध्यम से सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि के वादों का उद्घाटन करते हुए प्रदर्शित करते हैं। जब हम पौलुस के पत्रों पर जाते हैं, तो फिर से, हमें अक्सर स्पष्ट भूमि या नई सृष्टि की भाषा नहीं मिलती है, लेकिन हम अक्सर पौलुस को मसीह में कुछ ऐसे तत्वों की पूर्ति की अपील करते या पाते हुए पाते हैं जो स्पष्ट रूप से नई सृष्टि की वास्तविकताओं या भूमि के वादे या आने वाली नई सृष्टि के वादे से जुड़े हैं।

हालाँकि, हम एक ऐसे पाठ को देखेंगे जहाँ पॉल ने 2 कुरिन्थियों में नई सृष्टि की भाषा का स्पष्ट रूप से उपयोग किया है, और हम इस बारे में थोड़ी बात करेंगे कि हमें इसे कैसे संभालना चाहिए। लेकिन रोमियों से शुरू होने वाले पॉल के पत्र, फिर से, बल्कि चुनिंदा होंगे। मैं पॉल के पत्रों में हर छोटी-छोटी बात और हर छोटी-छोटी बात पर गौर नहीं करना चाहता, बल्कि उन कुछ पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि भूमि और नई सृष्टि के मुद्दे से निपटने में प्रमुख और महत्वपूर्ण पाठ हैं और यह कैसे पूरा होता है।

रोमियों 6-8 पहला खंड है जिस पर मैं रुकना चाहता हूँ, और फिर से; हम इसके कुछ तत्वों को देखेंगे, लेकिन अधिक व्यापक रूप से, एक नई सृष्टि के विषय को कैसे संप्रेषित किया जा सकता है। सबसे पहले, रोमियों 6 में, रोमियों 6 से शुरू करते हुए, और मैं केवल पहले कुछ छंदों को पढ़ना चाहता हूँ, शायद रोमियों 6 के 6-8 छंद। इन छंदों में, मुझे लगता है कि पॉल हमें नई सृष्टि की वास्तविकताओं से परिचित कराता है जो मसीह से जुड़ने के कारण पूरी हुई हैं। तो, अध्याय 6 और पद 1 से शुरू करते हुए, हम क्या कहेंगे? क्या हम पाप करते रहें ताकि अनुग्रह बढ़े? हम किसी भी तरह से पाप से नहीं मरे; हम आगे कैसे उसमें रह सकते हैं? या क्या तुम नहीं जानते कि हम सभी जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया? इसलिए, हम बपतिस्मा के माध्यम से मृत्यु में उसके साथ दफन हो गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के माध्यम से मृतकों में से जी उठा, हम भी एक नया जीवन जी सकें।

यदि हम उसकी मृत्यु में इस तरह उसके साथ जुड़े हुए हैं, तो हम निश्चित रूप से उसके पुनरुत्थान में भी उसके साथ जुड़ेंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर नष्ट हो जाए, ताकि हम अब पाप के दास न रहें क्योंकि जो कोई मर गया है वह पाप से मुक्त हो गया है। अब, यदि हम मसीह के साथ मरते हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि हम उसके साथ जीवित भी रहेंगे।

क्योंकि हम जानते हैं कि जब मसीह मरे हुआओं में से जी उठा, तो वह फिर मर नहीं सकता। अब उस पर मृत्यु का अधिकार नहीं। वह जो मृत्यु मरा; वह एक ही बार और हमेशा के लिए मरा।

लेकिन वह जो जीवन जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। अब, मैं इस खंड में दो बातों पर जोर देना चाहता हूँ। नंबर एक, एक बार फिर, ध्यान दें कि मसीह का अपना पुनरुत्थान किस तरह से नवीनता और जीवन से जुड़ा हुआ है, जो, फिर से, मुझे लगता है कि नए नियम का यह कहने का तरीका है कि यहाँ नई सृष्टि का वादा शुरू हुआ है।

आप इस पूरे लेख में एक तरह के फुटनोट के रूप में देखेंगे कि मैं सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि के बीच स्पष्ट रूप से अंतर नहीं कर रहा हूँ। मैं उन सभी को एक दूसरे से बहुत करीब से जुड़ा हुआ देखता हूँ। लेकिन यहाँ पॉल, मुझे फिर से लगता है, नई सृष्टि के जीवन का उल्लेख कर रहा है जिसका उद्घाटन अब यीशु मसीह के पुनरुत्थान के साथ हुआ है।

लेकिन ध्यान दें कि पौलुस यह भी सुझाव देता है कि हम भी उस पुनरुत्थान जीवन में भाग लेते हैं, या हम मसीह से जुड़ने के कारण उस नई सृष्टि में भाग लेते हैं। इसलिए, हम मसीह के साथ जी उठे हैं ताकि हम जीवन की नईता में चल सकें। और फिर, मुझे लगता है कि नयापन शब्द सिर्फ एक दिलचस्प गुणात्मक शब्द नहीं है, बल्कि मुझे लगता है कि यह संभवतः पुराने नियम से नई सृष्टि की भाषा को दर्शाता है।

इसलिए, क्योंकि हम मसीह में विश्वास के द्वारा एकजुट हुए हैं, इसका मतलब है कि हम उसके पुनरुत्थान के लिए एकजुट हुए हैं। और उसके कारण, हम फिर नई सृष्टि के जीवन में भाग लेते हैं। इसलिए, एक अर्थ में, नई सृष्टि में एक भौतिक तत्व है कि यीशु का अपना पुनरुत्थान शरीर भौतिक है।

अब, हम उसके साथ जुड़कर आध्यात्मिक रूप से इसमें हिस्सा लेते हैं, लेकिन फिर भी, हम मसीह के साथ उसके पुनरुत्थान में शामिल होने के कारण नई सृष्टि के पुनरुत्थान जीवन में आध्यात्मिक रूप से भाग लेते हैं। इसलिए, मसीह की मृत्यु से जुड़कर हम पुरानी सृष्टि और मृत्यु से मुक्त हो गए हैं, जिसने उसे समाप्त कर दिया। और अब हम एक नई सृष्टि में भाग लेते हैं, यानी नई सृष्टि का पुनरुत्थान जीवन, जिसका हम मसीह के साथ जुड़ने के कारण आनंद भी लेते हैं।

इसलिए, मसीह की मृत्यु को पुरानी सृष्टि और विशेष रूप से उसके प्रभुत्व को समाप्त करने के रूप में देखा जाता है। फिर से जी उठने से, यह न केवल मसीह मृत्यु को हराता है, बल्कि वह एक नई सृष्टि का भी उद्घाटन करता है। और फिर हम उसमें शामिल होते हैं, और हम आध्यात्मिक रूप से उसमें भाग लेते हैं, उस व्यक्ति के साथ जुड़कर जो वास्तव में मृतकों में से जी उठा है और जिसने वास्तव में नई सृष्टि के जीवन का अनुभव किया है।

और उसके साथ जुड़े होने के कारण, हम भी आध्यात्मिक रूप से उसमें भाग लेते हैं। दूसरा पाठ जो संभवतः संदर्भित करता है, मुझे लगता है, नई सृष्टि की वास्तविकताओं को भी संदर्भित करता है, और मुझे लगता है कि यह भी निहित रूप से इस्राएल को दिए गए भूमि के वादों को दर्शाता है, रोमियों के अध्याय 8 में पाया जाता है। रोमियों के अध्याय 8 में पॉल द्वारा कई बार इस्तेमाल किए गए वाक्यांशों में से एक जीवन की आत्मा या जीवन देने वाली आत्मा की भाषा है। मुझे अध्याय 8 के कुछ छंद पढ़ने दें। मैं रोमियों के अध्याय 8 के छंद 9 और उसके बाद से शुरू करूँगा। हालाँकि, आप पापी स्वभाव से नहीं बल्कि आत्मा द्वारा नियंत्रित होते हैं।

आपकी अधिकांश बाइबलों में इसे बड़े अक्षरों में लिखा गया है, जो पवित्र आत्मा का संदर्भ है। यदि परमेश्वर की आत्मा आप में रहती है, और यदि किसी के पास मसीह की आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है, लेकिन यदि मसीह आप में है, तो आपका शरीर पाप के कारण मरा हुआ है, फिर भी आपकी आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है। और यदि यीशु को मरे हुएओं में से

जिलाने वाले की आत्मा आप में रहती है, तो जिसने मसीह को मरे हुआ में से जिलाया, वह आपके नश्वर शरीरों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो आप में रहता है, जीवन देगा।

दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि रोमियों के अध्याय 8 में आत्मा और जीवन की इस भाषा में, और जीवन देने वाली आत्मा में जो कुछ हो रहा है, उसका एक हिस्सा यह है कि शायद, विशेष रूप से अध्याय 8 की आयत 11 में, आत्मा आपके नश्वर शरीरों को जीवन देती है। मुझे लगता है कि यह भाषा यहजेकेल 37 को दर्शाती है। फिर से, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को भूमि पर बहाल करने के संदर्भ में, हम सूखी हड्डियों की घाटी के इस दिलचस्प वृत्तांत को पढ़ते हैं और कैसे हड्डियाँ एक साथ आती हैं, और फिर आत्मा उसमें प्रवेश करती है और उन्हें जीवन देती है, और वे खड़ी हो जाती हैं।

मुझे लगता है कि पॉल शायद यहाँ जीवन की आत्मा के संदर्भ में उसी की ओर इशारा कर रहे हैं। इसलिए एक बार फिर, हमारे नश्वर शरीरों को जीवन देने वाली आत्मा नई सृष्टि के जीवन का प्रतीक है, या एक बार फिर, पुनरुत्थान का जीवन जिसे मसीह ने पहले ही अनुभव किया है, जो अब हमें परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से संप्रेषित किया गया है। तो, वही आत्मा जो मसीह को मृतकों में से जीवित करती है, वही आत्मा है जो हमें नवीनीकृत करती है और हमें जीवन भी देती है; यही नई सृष्टि का जीवन है।

इसलिए, यह पहली सृष्टि के पाप के प्रभावों को उलट देता है। वास्तव में, एक बार फिर, ग्रेग बील ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में कहा, आत्मा, पवित्र आत्मा, परमेश्वर के लोगों के जीवन में नई सृष्टि की प्रतिज्ञा और शुरुआत है। और फिर, यहजेकेल 37 भी उस नई सृष्टि के जीवन को उस भूमि पर लौटने से जोड़ता है जब परमेश्वर अपने लोगों को भूमि पर पुनर्स्थापित करता है।

हालाँकि इस अंश में, खास तौर पर रोमियों के अध्याय 8 में, यह भी स्पष्ट है कि अभी तक भौतिक पहलू नहीं है। यानी, सृष्टि, न केवल हमारे भौतिक शरीर प्रतीक्षा कर रहे हैं, हालाँकि वे अब मृत्यु के अधीन हैं, और वे अभी भी भौतिक पुनरुत्थान की प्रतीक्षा कर रहे हैं, साथ ही, पॉल भी कहते हैं कि सृष्टि छुटकारे की प्रतीक्षा कर रही है, जैसा कि हमारे भौतिक शरीर करते हैं। इसलिए, अध्याय 8 और श्लोक 19 की शुरुआत में, सृष्टि उत्सुकता से परमेश्वर के पुत्र के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है।

क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, परन्तु अधीन करनेवाले की इच्छा से, इस आशा से निराशा के अधीन थी कि सृष्टि भी विनाश के दासत्व से छूटकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमामय स्वतंत्रता में पहुँचेगी। हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक प्रसव-पीड़ाओं में कराहती रही है। इतना ही नहीं, बल्कि हम स्वयं, जिनके पास आत्मा का पहला फल है, पहले से ही नई सृष्टि के जीवन का अनुभव कर चुके हैं, हमारे पास आत्मा का पहला फल है, परन्तु अभी तक हम अपने भीतर कराहते नहीं हैं, क्योंकि हम पुत्रों के रूप में अपने गोद लिए जाने, अपने शरीरों के छुटकारे की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इसलिए, रोमियों 8 पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं के बीच तनाव को दर्शाता है, और हम पहले से ही नई सृष्टि के जीवन का अनुभव करते हैं। नई सृष्टि पहले से ही आत्मा द्वारा हमें जीवन देने के

कारण पूरी हो चुकी है, वही आत्मा जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया। फिर भी, हम अभी भी अपने शरीर के छुटकारे का इंतजार कर रहे हैं। हम अभी भी उस दिन तक कराहते हैं जब हम मसीह की तरह एक शारीरिक पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे।

लेकिन केवल इतना ही नहीं, भले ही सृष्टि कराहती हो; सृष्टि उस दिन का भी इंतजार कर रही है जब उसका उद्धार होगा और साथ ही उत्पत्ति 3 से पतन और अभिशाप के प्रभाव अंततः उलट दिए जाएँगे। वह प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है, लेकिन यह अभी भी नई सृष्टि, प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में अंतिम उपलब्धि की प्रतीक्षा कर रही है। एक और महत्वपूर्ण पाठ जो संभवतः एक नई सृष्टि का उल्लेख करता है और उसकी आशा करता है, और वास्तव में उत्पत्ति 1 और 2 और 3 में पहली सृष्टि के साथ भी संबंध रखता है, वह है 1 कुरिन्थियों 15।

मैं इस पूरे खंड को पढ़ने में समय नहीं लगाना चाहता, लेकिन 1 कुरिन्थियों 15, अध्याय का विषय, मसीह और विश्वासियों दोनों का पुनरुत्थान, पुराने नियम की नई सृष्टि से संबंध का सुझाव देता है। और जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, पुनरुत्थान उन प्रमुख वास्तविकताओं में से एक था जिसने नई सृष्टि के आगमन का संकेत दिया। यशायाह 65 और अन्य जगहों पर, जीवन नई सृष्टि की विशेषता है जब मृत्यु पराजित होगी।

और इसलिए, 1 कुरिन्थियों 15, पुनरुत्थान को एक नई सृष्टि के उद्घाटन से जोड़ता है। लेकिन आदम के साथ एक विशिष्ट संबंध पर भी ध्यान दें। 1 कुरिन्थियों के अध्याय 15 और श्लोक 45 में, मृतकों के पुनरुत्थान के साथ भी ऐसा ही होगा।

जो शरीर बोया जाता है वह नाशवान है; वह अविनाशी होने के लिए जी उठता है। वह अनादर में बोया जाता है, और वह महिमा में जी उठता है। वह निर्बलता में बोया जाता है, और वह सामर्थ्य में जी उठता है।

यह एक प्राकृतिक शरीर बोया जाता है, यह एक आध्यात्मिक शरीर है। यदि एक प्राकृतिक शरीर है, तो एक आध्यात्मिक शरीर भी है। इसलिए, यह लिखा गया था कि मनुष्य आदम एक जीवित प्राणी बन गया, अंतिम आदम, यीशु मसीह, एक जीवन देने वाली आत्मा।

आध्यात्मिक पहले नहीं आया, बल्कि प्राकृतिक आया, और उसके बाद आध्यात्मिक आया। पहला मनुष्य धरती की मिट्टी से बना था, दूसरा मनुष्य स्वर्ग से आया। अब, इस बारे में हम कई बातें कह सकते हैं, जाहिर है, लेकिन मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि पहली रचना और उस पर पाप का प्रभाव अब यीशु मसीह के माध्यम से आने वाली जीवन देने वाली आत्मा के माध्यम से एक नए रचनात्मक कार्य में दूर हो गया है।

इसलिए, अपने पुनरुत्थान के माध्यम से जीवन देकर, यीशु मसीह ने पूर्व-झूठ की स्थिति को बहाल किया। वह प्रभाव पर विजय प्राप्त करता है और मृत्यु के प्रभाव को उलट देता है जो पहली सृष्टि में आदम के पाप के कारण आया था। और अब यीशु मसीह स्वयं एक नई सृष्टि का उद्घाटन करते हैं।

तो फिर, पुनरुत्थान और जीवन, शायद अनन्त जीवन के वादे पर भी वापस जा रहे हैं, खासकर यूहन्ना और कहीं और, जीवन का वादा अंततः नई सृष्टि के जीवन से जुड़ा हुआ है और दर्शाता है कि नई सृष्टि का उद्घाटन पहले ही हो चुका है, सबसे पहले मसीह के पुनरुत्थान द्वारा, लेकिन मसीह और उसके पुनरुत्थान से जुड़ने के कारण हमारे लिए भी। एक पाठ, वह पाठ जो स्पष्ट रूप से एक नई सृष्टि को संदर्भित करता है, 2 कुरिन्थियों, अध्याय 5, और श्लोक 17 में पाया जाता है। 2 कुरिन्थियों 5 और 17 यह कहते हैं: अगर मैं वापस जा सकता हूँ और 16 को भी पढ़ सकता हूँ, तो अब से, हम किसी को भी सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं देखते हैं, हालांकि हमने एक बार मसीह को इस तरह से देखा था, हम अब ऐसा नहीं करते हैं।

और यहाँ वह श्लोक है जिस पर मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें: इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुराना चला गया है, नया आ गया है। अब, यह एक काफी मानक अनुवाद है: यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। इसके साथ कठिनाई यह है कि जब हम इसे पढ़ते हैं, तो हम अक्सर इसकी व्याख्या करने और इसे विशेष रूप से व्यक्तिवादी शब्दों में पढ़ने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

इसलिए, हम इसे इस तरह पढ़ते हैं: मैं मसीह में एक नया प्राणी हूँ, मैं यीशु मसीह में एक नया सृजन हूँ, मसीह ने मुझे नए सिरे से बनाया है और मुझे एक नया प्राणी बनाया है, आदि आदि, और मैं निश्चित रूप से इनमें से किसी भी बात से इनकार नहीं करना चाहता, लेकिन मैं वापस लौटना चाहता हूँ और पूछना चाहता हूँ कि इस अंश का उद्देश्य क्या है? पॉल क्या कह रहा है? सबसे पहले, मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि यशायाह अध्याय 65 और नई सृष्टि के संदर्भ में एक बहुत ही स्पष्ट संकेत प्रतीत होता है, जहाँ भविष्यवक्ता कहता है, देखो, मैं एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाने जा रहा हूँ।

वह कहता है कि पुरानी बातों को भूल जाने, पुरानी बातों को याद न रखने के संदर्भ में, पुरानी बातें बीत चुकी हैं, और देखो, मैं एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बना रहा हूँ। ध्यान दें कि कैसे पद 17 में, आप उसी विरोधाभास को पाते हैं; इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है, और फिर वह तुरंत कहता है, पुराना चला गया है, नया आ गया है। यह विरोधाभास यशायाह अध्याय 65 से सीधे आता है।

आप इसे प्रकाशितवाक्य 21:1 में भी पाते हैं, जहाँ यूहन्ना कहता है, मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला आकाश और पृथ्वी समाप्त हो चुके थे। और अब पौलुस ने वही विरोधाभास, एक नई सृष्टि, के बारे में बताया है, क्योंकि पुराना चला गया है, नया आ गया है। दूसरे शब्दों में, मुझे यकीन है कि पौलुस यशायाह अध्याय 65 का हवाला दे रहा है।

इससे मुझे लगता है कि अगर आप अध्याय 5 और अध्याय 6 में आगे पढ़ेंगे, तो पॉल पुराने नियम के कई पाठों को उद्धृत करना शुरू कर देता है, खासकर अध्याय 6 के अंत में। वह कई पाठों को उद्धृत करेगा, उनमें से कुछ यशायाह और अन्य जगहों से हैं, यह सुझाव देते हुए कि भले ही पॉल यशायाह 65 से शब्दशः उद्धरण नहीं देता है, लेकिन वह चाहता है कि आप वापस जाएं और यशायाह 65 के प्रकाश में इसे पढ़ें। मैं यह भी चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि यशायाह 65 में

किसी नए प्राणी या नए व्यक्ति का उल्लेख नहीं है, बल्कि एक नई रचना का उल्लेख है। मैं बस थोड़ी देर में उस पर वापस आऊंगा।

इसलिए, मसीह में होना, यीशु मसीह द्वारा आरंभ की गई नई सृष्टि का हिस्सा होना है। पॉल को क्यों यकीन है कि अगर कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है? अध्याय 5 की आयत 15 पर वापस जाएँ। और वह, मसीह, सभी के लिए मरा, ताकि जो जीवित हैं वे अब अपने लिए न जीएँ, बल्कि उसके लिए जीएँ जो उनके लिए मरा और फिर से जी उठा। इसलिए एक बार फिर, मुझे लगता है कि पॉल कह रहा है कि यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने एक नई सृष्टि का उद्घाटन किया है, और हम यीशु मसीह से जुड़ने के कारण उस नई सृष्टि का हिस्सा हैं, जिसके पुनरुत्थान ने नई सृष्टि के जीवन का उद्घाटन किया, और इसलिए नई सृष्टि स्वयं।

इसलिए, पॉल कह सकता है कि यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। अब, यह मुझे उस वाक्यांश पर लाता है: वह एक नई सृष्टि है। मैं मूल NIV संस्करण से पढ़ रहा हूँ, लेकिन NIV के 2011 संस्करण ने वास्तव में इसे अपडेट किया है, और यह कुछ इस तरह पढ़ता है: यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है।

वास्तव में, यदि आप ग्रीक जानते हैं, और आप इसके ग्रीक पाठ को देखते हैं, तो यह शाब्दिक रूप से यह कहता है: यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। यह केवल इतना ही कहता है। यह नहीं कहता कि वह एक नई सृष्टि है, हालाँकि यह सच हो सकता है या निहित हो सकता है, लेकिन यह केवल इतना कहता है कि यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है।

इसलिए, मैं इसे फिर से लेता हूँ, पॉल जो कह रहा है वह यह है कि यदि कोई मसीह में है, अगर मैं इसे दूसरे शब्दों में कह सकता हूँ, तो वे अब एक नई सृष्टि के सदस्य हैं या उसमें भाग लेते हैं। यदि कोई मसीह में है, तो वे नई सृष्टि का हिस्सा हैं। क्यों? क्योंकि यदि वे मसीह के सदस्य हैं, तो पद 15, मसीह को मृतकों में से जी उठाया गया है, जिसका अर्थ है कि उन्होंने नई सृष्टि के जीवन का उद्घाटन किया है।

इसलिए, अगर मैं मसीह में हूँ, तो मैं भी नई सृष्टि का हिस्सा हूँ और उसमें भाग लेता हूँ। इसलिए, यह कोई व्यक्तिवादी कथन नहीं है। मैं एक नया प्राणी हूँ, या मसीह ने मुझे नया बनाया है, या ऐसा ही कुछ।

हालाँकि, फिर से, मैं इस बात पर विवाद नहीं करना चाहता कि धार्मिक रूप से वे सही हैं। लेकिन कम से कम यहाँ, पॉल एक ब्रह्माण्ड संबंधी कथन कर रहा है। यदि मैं मसीह में हूँ, तो मैं उद्घाटन की गई नई सृष्टि का हिस्सा हूँ, जैसा कि 2011 NIV कहता है।

यदि कोई मसीह में है, तो यह वास्तव में कहता है कि एक नई सृष्टि आ गई है। इसलिए, कुंजी, एक बार फिर, मसीह के साथ उसके पुनरुत्थान में एकता है, जो नई सृष्टि का उद्घाटन करती है। इसलिए, इस पाठ को समेटने के लिए, मैं इसे लेता हूँ कि 2 कुरिन्थियों 5.17 में नई सृष्टि यशायाह अध्याय 65 में यशायाह की नई सृष्टि का उद्घाटन है।

पॉल को पूरा यकीन है कि इसका उद्घाटन यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से हुआ है और हम उस नई सृष्टि में भाग लेते हैं; हम उस नई सृष्टि के हैं यदि हम मसीह के हैं। इसलिए, नई सृष्टि में संभवतः आध्यात्मिक और भौतिक दोनों आयाम हैं। यह ईश्वर और एक दूसरे के मेल-मिलाप के संदर्भ में है।

इसलिए, हम ईश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं, और हम एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं। इसलिए आध्यात्मिक रूप से, हम एक नई सृष्टि की वास्तविकता का हिस्सा हैं, लेकिन शारीरिक रूप से, नई सृष्टि का उद्घाटन मसीह के अपने शारीरिक पुनरुत्थान द्वारा किया गया है। इसलिए, मुझे लगता है कि हम 2 कुरिन्थियों 5:17 में नई सृष्टि के आध्यात्मिक और भौतिक दोनों आयाम पाते हैं। दूसरे पाठ पर चलते हैं जो मुझे लगता है कि नई सृष्टि के उद्घाटन को स्पष्ट रूप से चित्रित करता है, और फिर से, मैं नई सृष्टि को भूमि के इरादे से जोड़ता हूँ, जो मूल सृष्टि से जुड़ता है।

मैं उन सभी को एक साथ काम करते हुए देखता हूँ। लेकिन इफिसियों के अध्याय 2 और श्लोक 1 से 7 में, मैं चाहता हूँ कि आप नई सृष्टि की भाषा के लिए फिर से सुनें, और फिर श्लोक 7 के बाद, मैं आगे बढ़ूँगा और कुछ अन्य श्लोक भी पढ़ूँगा जिन्हें आप शायद पहचान लेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि नई सृष्टि के इस विषय के लिए वे महत्वपूर्ण हैं। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे जिनमें तुम रहते थे जब तुम इस दुनिया के तरीकों और हवा के राज्य के शासक, आत्मा का अनुसरण करते थे जो अब अवज्ञा के पुत्रों में काम कर रहा है।

हम सभी जो उनके बीच रहते थे, एक समय में अपने पापी स्वभाव की लालसाओं को संतुष्ट करते थे और उसकी इच्छाओं और विचारों का पालन करते थे। बाकी लोगों की तरह, हम भी स्वभाव से क्रोध की वस्तुएँ थे, लेकिन अपने महान प्रेम के कारण, परमेश्वर, जो दया में समृद्ध है, ने हमें मसीह के साथ जीवित कर दिया, भले ही हम अपने अपराधों में मरे हुए थे। यह अनुग्रह से है कि आप बचाए गए हैं।

और परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ जिलाया और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठाया ताकि आने वाले युगों में, वह मसीह यीशु में हमारे प्रति अपनी दया में व्यक्त अपने अनुग्रह के अतुलनीय धन को दिखा सके। तो एक बार फिर, जीवित किए जाने की भाषा पर ध्यान दें, हालाँकि हम मरे हुए थे, जो कि उत्पत्ति 3 से पाप के प्रभाव में इस वर्तमान दुनिया की विशेषता है। हालाँकि हम मरे हुए थे, परमेश्वर ने हमें जीवित किया है, और एक बार फिर, उसने हमें मसीह के साथ जिलाकर या हमें उसके पुनरुत्थान में भाग लेने के लिए प्रेरित करके ऐसा किया है, जिसे हम पहले ही नई सृष्टि के उद्घाटन में देख चुके हैं। और अगर यह आपको खुद पर यकीन नहीं दिलाता है, तो पद 10 को देखें।

मुझे लगता है कि हमने इसे एक खास तरीके से पढ़ा है, इतना कि हम पद 10 के महत्व को भूल गए हैं, क्योंकि हम परमेश्वर की कृति हैं जो मसीह यीशु में अच्छे काम करने के लिए बनाए गए हैं जिन्हें करने के लिए परमेश्वर ने पहले से ही हमारे लिए तैयार किया है। इसलिए, हमें अच्छे कामों

के लिए बनाया गया है; यानी, अच्छे काम अब परमेश्वर की समानता के नवीनीकरण से जुड़े हैं, जो धार्मिकता और पवित्रता में बनाया गया है।

इफिसियों के अध्याय 4 और श्लोक 22 और 24 भी। मूल सृष्टि और नई सृष्टि के बीच संबंधों पर ध्यान दें। श्लोक 22, आपको अपने पिछले जीवन के तरीके के बारे में सिखाया गया था कि अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार फेंको, जो अपनी धोखेबाज इच्छाओं से भ्रष्ट हो रहा है, पुराना मनुष्यत्व शायद वही है जो हम आदम में हैं, नया बनने के लिए, नएपन की उस भाषा पर ध्यान दें, अपने मन के दृष्टिकोण में नया बनने के लिए और नए मनुष्यत्व को धारण करने के लिए, जो मैं अब मसीह में हूँ, नया मनुष्यत्व, सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर के समान बनने के लिए बनाया गया है।

दूसरे शब्दों में, अब नई सृष्टि का हिस्सा परमेश्वर ने हमें बनाया है, और परमेश्वर ने अब हमें धार्मिकता और पवित्रता में नई सृष्टि का जीवन जीने के लिए बनाया है, वह जीवन जीने के लिए जो उसने परमेश्वर के लोगों के लिए पहली सृष्टि में जीने का इरादा किया था। अब, वह हमें एक नए सृजित कार्य में उस जीवन को जीने के लिए नवीनीकृत कर रहा है। इसलिए, अध्याय 2 और श्लोक 10 में, क्योंकि हम मसीह यीशु में परमेश्वर की कारीगरी हैं, शायद फिर से परमेश्वर ने हमें केवल अच्छे काम करने के लिए नहीं बनाया है, लेकिन इसे शायद सृष्टि के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

हमें अध्याय 4 और आयत 22 से 24 के अनुसार जीवन जीकर, धार्मिकता और पवित्रता का जीवन जीकर, नई सृष्टि की फलदायीता उत्पन्न करनी है, जैसा कि परमेश्वर ने हमें बनाया है। इसी तरह, कुलुस्सियों अध्याय 1 पर ध्यान दें, और मैं चाहता हूँ कि आप एक बार फिर ध्यान दें; मैं बस कुलुस्सियों 1 और कुलुस्सियों 3 में कुछ खंड पढ़ना चाहता हूँ; मैं चाहता हूँ कि आप एक बार फिर कुछ पाठों या नई सृष्टि की भाषा से संबंधित कुछ खंडों पर ध्यान दें। तो, कुलुस्सियों अध्याय 1 और आयत 15।

हम इनमें से कुछ ग्रंथों पर वापस जाने वाले हैं जो अन्य विषयों से संबंधित हैं। जैसा कि हमने कई बार कहा है, इन विषयों को अलग करना असंभव है, अन्यथा पूरी चीज बिखर जाएगी, जैसे कपड़े के एक टुकड़े से धागे निकाल दिए जाएं और पूरी चीज बिखर जाए। ये इतने अविभाज्य रूप से एक साथ जुड़े हुए हैं और इनमें से बहुत से विषय एक साथ जुड़े हुए हैं।

तो, इनमें से कुछ पाठ, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, हम फिर से चर्चा करेंगे, और विशेष रूप से यह। लेकिन अध्याय 1 की आयत 15, वह, यानी यीशु मसीह, अदृश्य परमेश्वर की छवि है, सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है। क्योंकि उसी के द्वारा, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें, दृश्यमान और अदृश्य, बनाई गई थीं।

मैं यहीं रुकूंगा, लेकिन सृष्टि की भाषा पर ध्यान दीजिए। यीशु मसीह अब परमेश्वर की छवि है। आदम परमेश्वर की छवि में बनाया गया एक दृष्ट था, लेकिन अब मसीह परमेश्वर की छवि और समानता है और समग्र सृष्टि में सबसे बड़ा है।

इसका मतलब है कि वह सृष्टि में परमेश्वर की सच्ची छवि है। लेकिन वह सृष्टि के लिए जिम्मेदार भी है। वह वह एजेंट है जिसके माध्यम से परमेश्वर पहली सृष्टि लाने के लिए काम करता है।

उत्पत्ति 1:1 की प्रतिध्वनि पर ध्यान दें। शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। अब, पौलुस कहता है कि स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें उसके द्वारा या उसमें बनाई गई थीं। इसलिए, यीशु पहले रचनात्मक कार्य में शामिल है, लेकिन श्लोक 18 पर ध्यान दें।

और वह अपने शरीर, चर्च का मुखिया है। वह शुरुआत है और मृतकों में से ज्येष्ठ है। पुनरुत्थान की भाषा पर फिर से ध्यान दें।

दूसरे शब्दों में, पौलुस कह रहा है कि यीशु न केवल परमेश्वर की छवि के रूप में पहली सृष्टि का हिस्सा है, जो परमेश्वर की सच्ची छवि है, जो सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है, पहली सृष्टि है, बल्कि पद 18 में, वह अपने पुनरुत्थान के द्वारा एक बार फिर से नई सृष्टि का उद्घाटन करने के लिए भी जिम्मेदार है। वह मृतकों में से ज्येष्ठ है। उसका पुनरुत्थान एक नई सृष्टि का उद्घाटन करता है।

मुझे लगता है कि कुलुस्सियों के अध्याय 3 और श्लोक 9 और 10 में मसीह से जुड़ी सृष्टि की भाषा ज़्यादा मिलती है। इसलिए एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने अपने पुराने स्वभाव को उसके कामों के साथ उतार दिया है। फिर से, ज़्यादा विस्तार में जाए बिना, पुराना स्वभाव शायद वही है जो मैं आदम में हूँ।

पुराना स्व मेरे अस्तित्व का कोई ऑन्टोलॉजिकल हिस्सा नहीं है या, जैसा कि कुछ अनुवाद कह सकते हैं, मेरा पापी स्वभाव या मेरा वह हिस्सा जो पाप करता है या ऐसा कुछ। मुझे लगता है कि पुराना स्व मेरा पूरा अस्तित्व है जो आदम से संबंधित है, पाप के नियंत्रण में है, आदम के अधिकार के अधीन है, पाप के बंधन में है, आदम में मेरा पूरा स्व है। पॉल अध्याय 3 और श्लोक 9 में कहता है कि उस पुराने स्व को आपने उतार दिया है, और श्लोक 10 में, आपने नया स्व पहन लिया है।

अब, नया स्व वह सब कुछ है जो मैं मसीह में हूँ, मसीह से संबंधित हूँ और मसीह के शासन और अधिकार के अधीन हूँ। आपने नया स्व धारण कर लिया है, लेकिन ध्यान दें कि पौलुस क्या कहता है, जो अपने निर्माता की छवि में ज्ञान में नया हो रहा है। तो, फिर से सृष्टि की भाषा पर ध्यान दें।

तो एक बार फिर पॉल कह रहा है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, यीशु, परमेश्वर की सच्ची छवि के रूप में, अब वह पूरा कर चुका है जो परमेश्वर का मानवता के लिए सबसे पहले इरादा था, उत्पत्ति 1 और 2 में, लेकिन पाप के कारण विफल हो गया था। अब, यीशु मसीह, परमेश्वर की सच्ची छवि के रूप में, सृष्टि को नवीनीकृत और पुनर्स्थापित करने के लिए आया है, और अब, मसीह से संबंधित होने के कारण, छवि भी हममें नवीनीकृत हो गई है। फिर से, श्लोक 10 कहता है कि नए स्व को धारण करो, जो अपने निर्माता की छवि में ज्ञान में नवीनीकृत होता है।

मुझे लगता है कि यह उत्पत्ति अध्याय 1 की ओर सीधा इशारा है। इसलिए एक बार फिर, हम सृष्टिकर्ता की छवि में नए हो रहे हैं, जो कि ईश्वर है, जो कि सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है, ताकि नई रचना, जबकि छवि वाहक, हम पहली रचना के आदेश को पूरा करते हैं, अब एक उद्घाटन नई रचना में। और हम मसीह से

संबंधित होने के कारण ऐसा करते हैं। और एक बार फिर, यह धारणा प्रतीत होती है कि केवल मसीह के साथ एकता से, जो कि ईश्वर की सच्ची छवि है, अध्याय 1 श्लोक 15 में, छवि को हममें नवीनीकृत किया जा सकता है।

केवल परमेश्वर के सच्चे स्वरूप, यीशु मसीह के कारण ही आदम का आदेश और पहली सृष्टि के लिए परमेश्वर का उद्देश्य अब हम में पूरा हो सकता है। इसलिए, जो बात पॉल के लिए भी महत्वपूर्ण है, और मैं इस ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह यह है कि यह पॉल के लिए केवल सैद्धांतिक नहीं है। यह केवल पॉल द्वारा नई सृष्टि और पूर्ति के बारे में धर्मशास्त्र का निर्माण नहीं है और यह भी कि कैसे नई सृष्टि मसीह में पूरी होती है।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें, खास तौर पर कुलुस्सियों में, लेकिन इफिसियों के पाठ और रोमियों के पाठ में भी जिसे हम पढ़ते हैं, कि नई सृष्टि की धारणाओं को नैतिक संदर्भ में रखा गया है। मसीह के पुनरुत्थान जीवन की नई सृष्टि की वास्तविकता नई सृष्टि के जीवन को जीने के लिए सक्षमता प्रदान करती है। अर्थात्, इफिसियों के अध्याय 4 के अनुसार धार्मिकता और पवित्रता का जीवन जीना। इसलिए, नई सृष्टि की वास्तविकता, नई सृष्टि का उद्घाटन, ठीक इसलिए है ताकि हम पुरानी सृष्टि के मूल्यों और दृष्टिकोणों के अनुसार न जीएँ, बल्कि इसके बजाय, हम नई सृष्टि के जीवन में मूल्यों और दृष्टिकोणों के अनुसार जी सकें।

याद रखें, रोमियों के अध्याय 6 में, हमें जीवन की नईता में चलने के लिए उठाया गया है। हमने इफिसियों के अध्याय 4 में और अब कुलुस्सियों के अध्याय 3 में देखा कि नई सृष्टि का पूरा उद्देश्य यह है कि हम नई सृष्टि का जीवन जीएँ। कि हम ऐसा जीवन जीएँ जो नई सृष्टि की फलदायीता को प्रदर्शित करे।

वास्तव में, कई संदर्भों में, ग्रेग बील ने नए नियम में फलदायी होने की भाषा को, नैतिकता के मामले में फलदायी होने की भाषा को, गलातियों 5 में आत्मा के फल की तरह जोड़ा है। उन्होंने इसे नई सृष्टि की फलदायी होने से जोड़ा है। चाहे पॉल की ओर से यह जानबूझकर किया गया हो या नहीं, उन विशिष्ट ग्रंथों में, कम से कम, पॉल ने नई सृष्टि की वास्तविकताओं को नैतिक संदर्भ में रखा है। जब हम कुलुस्सियों और इफिसियों में बुराई और सद्गुण की सूची पढ़ते हैं, जब पॉल के पास यह और यह और यह से बचने की ये लंबी सूचियाँ हैं, तो कुलुस्सियों 3 में, वह कहता है, अपनी सांसारिक प्रकृति, यौन अनैतिकता, अशुद्धता, वासना, बुरी इच्छाओं, लालच, जो मूर्तिपूजा है, को मार डालो।

और फिर बाद में, वह कहता है, जैसे परमेश्वर के चुने हुए लोग करुणा, दया, नम्रता, सौम्यता, धैर्य धारण करते हैं। पौलुस क्या कर रहा है? यह केवल उसके लोगों के लिए क्या करें और क्या न करें की सूची नहीं है। वह केवल दिन के सामान्य दोष और सद्गुण की सूची उधार नहीं ले रहा है।

लेकिन इन्हें नई सृष्टि के संदर्भ में रखा गया है। यानी, केवल नई सृष्टि के प्रकाश में ही हम इन चीजों को जीने में सक्षम हैं। वास्तव में, यदि नई सृष्टि आती है, तो हम नई सृष्टि के फल उत्पन्न करने से खुद को नहीं रोक सकते।

और मैं इन बुराइयों से बचने और इन सद्गुणों को अपनाने के लिए इससे बेहतर कोई कारण नहीं सोच सकता। मैं इस तथ्य से बेहतर कोई कारण नहीं सोच सकता कि यह इस तथ्य की वास्तविकता का प्रदर्शन है कि नई सृष्टि पहले से ही यीशु मसीह के व्यक्तित्व में आ चुकी है, लेकिन उसके लोगों में भी जो उसके हैं। अब तक, हमने देखा है कि सुसमाचारों और पॉलिन साहित्य में एक अर्थ में नई सृष्टि का उद्घाटन पहले से ही यीशु की अपनी सेवकाई, जीवन की पेशकश, उसके अपने पुनरुत्थान के माध्यम से हो चुका है, और फिर मसीह के पुनरुत्थान और मसीह के पुनरुत्थान जीवन में हमारे द्वारा भाग लेने के द्वारा, हम फिर नई सृष्टि में भाग लेते हैं।

लेकिन इसके नैतिक निहितार्थ और परिणाम हैं। यह सिर्फ एक धार्मिक वास्तविकता नहीं है जिसका हम आनंद लेते हैं या जिसका हम दावा करते हैं, बल्कि यह कुछ ऐसा है जो हमें जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है, ताकि हम उस नई सृष्टि की फलदायीता उत्पन्न कर सकें जिसका उद्घाटन यीशु मसीह में पहले ही हो चुका है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 4 है, न्यू टेस्टामेंट में सृष्टि, भूमि, पुनर्निर्माण, भाग 1।